NJESR/August-2022/Volume-4/Issue-8 E-ISSN-2582-5836

DOI-10.53571/NJESR.2022.4.8.10-13

''समाज मनोविज्ञान की विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा
प्राचार्य
M.B. College Of Education, Darbhanga
E-mail:- dinesh9269809255@gmail.com

(Received : 11 July 2022/Revised : 20 July 2022/Accepted : 05 August 2022/Published : 15 August 2022)

सारांश– (Abstract)

समाज मनोविज्ञान विभिन्न तरह की सामाजिक समस्याओं को समझने में तथा उनका समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी व्यावहारिक उपयोगिता अधिक है। सामाजिक विकास में मदद करता है। सामाजिक जीवन में पूर्वाग्रह रूढ़ि, युक्तिओं परम्पराओं में व्याप्त विसंगतियों को दूर करता है। सामाजिक मानकों सामाजिक मूल्यों, सामाजिक, शक्ति परस्पर एकता का भाव इत्यादि के बारे में समुचित ज्ञान प्रदान कर उन्हें सामाजिक समायोजन करने में मदद करता है। समाज मनोविज्ञान व्यक्तियों की अन्तक्रियाओं का अध्ययन सामाजिक परिस्थिति में करके एक निश्चित सामाजिक क्रम तथा सामाजिक व्यवस्था कायम करता है। समाज मनोविज्ञान व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास में सहायता करता है। समाज मनोविज्ञान हमारे जीवन में अत्यधिक उपयोगी विज्ञान है।

मुख्य शब्दावली (Keywords)

समाज, अन्तःक्रिया, व्यक्ति, सामाजीकरण, समाज मनोविज्ञान, सामाजिक व्याधिकी, समूह विश्लेषणात्मक, विषय वस्तु दृष्टिकोण, वैज्ञानिक, व्यवहार, संवेग इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

भूमिका

समाज मनोविज्ञान में व्यक्तियों का अध्ययन समाज में किया जाता है। मनोविज्ञान की प्रत्येक शाखा के समान समाज मनोविज्ञान का भी अपना एक विशेष इतिहास है। आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार समाज मानोविज्ञान के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है– (1) दार्शनिक विचारधारा (2) समाज मनोविज्ञान का प्रारम्भिक काल (3) 1940 से 1970 के मध्य का समाज मनोविज्ञान (4) 1970 के बाद का समाज मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान– मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत इस तथ्य का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की वास्तविक, काल्पनिक अथवा प्रछन्न उपस्थिति हमारे विचार, संवेग, अथवा व्यवहार को किस प्रकार से प्रभावित करती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। अपनी विविध आवश्यकताओं के लिये मनुष्य दूसरे व्यक्तियों से, समूहों से, समुदायों से अन्तः क्रियात्मक संबंध स्थापित करता है। व्यक्ति के समाज में एवं व्यवहार में गहरा संबंध होता है। सदस्यों के बीच आपसी संबंध उनके, परस्पर व्यवहार पर निर्भर करते है। मनुष्य के विचारों व्यवहारों,

एवं क्रियाओं का प्रभाव एक–दूसरे पर पड़ता है। व्यक्ति का व्यवहार सर्वदा एक समान नहीं रहता है। एक ही व्यक्ति कई रूपों में व्यवहार करता है। उसके विचार, भाव तथा व्यवहार विविध परिस्थितियों में प्रभावित भी होते रहते है मानव दूसरों के बारे में अलग–अलग तरह से सोचता है एवं प्रभावित भी होता है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों को वैज्ञानिक अध्ययन है। ऐतिहासिक रूप से इसके विकास में समाज शास्त्र का भी योगदान है। समाज मनोविज्ञान पर मैकडूगल का भी महत्वपूर्ण योगदान है इन्होने इस बात पर बल दिया है कि सामाजिक व्यवहार मूलतः जन्मजात प्रवृत्तियों द्वारा निर्धारित होता हैं। इस जन्मजात प्रवृत्तियों को उन्होंने सहजवृत्ति या मूल प्रवृत्ति कहा है। प्रतिद्वंदिता एक ऐसा सामाजिक व्यवहार है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रायः दूसरे व्यक्ति की कीमत पर अपना निष्पादन अधिक आगे से आगे बढ़ाना चाहता है। मनोविज्ञान की शुरूआत 1908 से मानी गयी है। विलियम मैकडूगल ने अपनी पुस्तक (Introduction to Social Psychology) मे समाज मनोविज्ञान के विषयवस्तु का अध्ययन भिन्न–भिन्न ढ़ंग से करके इसे अपने दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। समाज मनोविज्ञान की विषयवस्तु सामाजिक अन्तःक्रिया है सामाजिक अन्तःक्रिया से तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच वाली अन्तःक्रियाओं से होता है। करीब–करीब सभी समाज मनोवैज्ञानिकों ने अपनी–अपनी परिभाषाओं में इसी सामाजिक अन्तः क्रिया को केन्द्र मानकर समाज मनोविज्ञान के स्वरूप की व्याख्या करके अपने –अपने ढ़ंग से की है।

समाज मनोविज्ञान की परिभाषाएँः–

किम्बल यंग के मतानुसार–''समाज मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अन्तःक्रियाओं का तथा इन अन्तः क्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं, संवेगों एवं आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करता है।''

बेरोन बर्न के अनुसार–'' समाज मनोविज्ञान एक ऐसा वैज्ञानिक क्षेत्र है जो सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहार एवं चिन्तन के स्वरूप एवं कारणों को समझने की कोशिश करता है।''

मैयर्स के अनुसार–''व्यक्ति दूसरों क बारे में किस तरह सोचता है दूसरों को कैसे प्रभावित करता है तथा एक–दूसरे को किस तरह संबंधित करता है का वैज्ञानिक अध्ययन ही समाज मनोविज्ञान है।'' समाज मनाविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार तथा अनुभूतियों का सामाजिक परिस्थिति में अध्ययन करने का विज्ञान है विभिन्न परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर निम्नांकित तथ्य के रूप में कारक प्राप्त होते है–

(1) समाज मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहारों एवं अनुभूतियों का अध्ययन किया जाता है।

(2) एक समाज मनोवैज्ञानिक इन व्यवहारों एवं अनुभूतियों का अध्ययन सामाजिक परिस्थिति में करता है।

(3) समाज मनोविज्ञान में अन्तः क्रिया महत्वपूर्ण होती है।

(4) समाज मनोविज्ञान में प्रतीकात्मक एवं आमने–सामने की अन्तःक्रिया का अध्ययन किया जाता है।

(5) व्यक्ति तथा व्यक्ति के बीच अन्तःक्रिया

(6) व्यक्ति तथा समूह के मध्य अन्तःक्रिया

(7) समूह तथा समूह के मध्य अन्तःक्रिया

सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक प्रकृति है क्योंकि यह विज्ञान के अन्य विषयों की तरह ही मूल्य एवं विधियों को अपनाता है यह एक आनुभविक विज्ञान है सामाजिक मनोविज्ञान शोध के चार

मुख्य लक्ष्य होते है– (1) कारक (2) कार्य कारण विश्लेषण (3) सिद्धांत निर्माण (4) उपयोग
सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत अभिप्रेरणा, उद्वेगात्मक व्यवहार प्रत्यक्षीकरण स्मरण, शक्ति इत्यादि पर सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करने के साथ ही साथ अनुकरण सुझाव, पक्षपात आदि का परम्परागत सामाजिक मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं के प्रभाव का भी अध्ययन किया जाता है।

विशेषताएँः– समाज मनोविज्ञान की निम्नलिखित विशेषताएँ है जो इस प्रकार से है–

(1) बच्चे का सामाजीकरण संस्कृति एवं व्यक्तित्व– एक जैवकीय प्राणी किस प्रकार सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सामाजिक प्राणी बनता है। यह इसके अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है। संस्कृति और व्यक्तित्व के संबंधों को भी ज्ञात किया जाता है। व्यक्तित्व के विकास में सामाजीकरण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सामाजीकरण क विविध पक्षों एवं स्वरूपों का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

(2) वैयक्तिक एवं समूह भेद– दों मनुष्य एक समान नहीं होते है उनमें भेद पाया जाता है। वैयक्तिक विभिन्नता तथा समूह भिन्नता के सामाजिक मनोवैज्ञानिक कारणों का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान का विषय क्षेत्र है।

(3) मनोवृति तथा मत सम्प्रेषण शोध अन्तर्वस्तु विश्लेषण एवं प्रचार– मनोवृति या अभिवृति का निमार्ण मनोवृति बनाम क्रिया कैसे मनोवृति व्यवहार को प्रभावित करती है? कब मनोवृतियाँ व्यवहार को प्रभावित करती है। इत्यादि के साथ–साथ जनमत निर्माण विचारों के आदान–प्रदान के माध्यमों, सम्प्रेषण अनुसंधानों, अन्तर्वस्तु विश्लेषण तथा प्रचार के विविध स्वरूपों एवं प्रभावों इत्यादि का इसके सम्मिलित किया जाता है। समाज मनोविज्ञान सम्प्रेषण के विविध साधनों तरीकों एवं प्रभावों का अध्ययन करता है।

(4) सामाजिक अन्तःक्रिया समूह गत्यात्मकता और नेतृत्व– सामाजिक मनोविज्ञान का क्षेत्र सामाजिक अन्तःक्रिया समूह गत्यात्मकता तथा नेतृत्व के विविध पक्षों एवं प्रकारों को भी सम्मिलित करता है।

(5) सामाजिक व्याधिकी– समाज है तो सामाजिक समस्याओं का होना स्वाभाविक है। सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सामाजिक व्याधिकी के विविध पक्षों एवं स्वरूपों का गहन एवं विस्तृत अध्ययन किया जाता है जैसे बाल–बाल अपराधी, मानसिक असामान्यता, सामान्य–अपराधी, औद्योगिक संघर्ष आत्महत्या इत्यादि।

(6) घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति– सामाजिक मनोविज्ञान में राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय राजनैतिक व्यवहारों का भी विशद अध्ययन किया जाता है। नेता–अनुयायी सम्बन्धों की गत्यात्मकता सामाजिक प्रत्यक्षीकरण समूह निर्माण, तथा विकास का अध्ययन, पारिवारिक समायोजन की गत्यात्मकता का अध्ययन, अध्यापन सीख प्रक्रिया की गत्यात्मकता इत्यादि विविध क्षेत्र आते है।

रॉस महोदय का कहना है कि– ''सामाजिक मनोविज्ञान उन मानसिक अवस्थाओं एवं प्रवाहों का अध्ययन करता है जो मनुष्यों में उनके पारस्परिक सम्पर्क के कारण उत्पन्न होते है। यह विज्ञान मनुष्यों की उन भावनाओं, विश्वासों और कार्यों में पाये जाने वाले उन समानताओं को समझने और वर्णन करने का प्रयत्न करता है। जिनके मूल में मनुष्यों के अन्दर होने वाली अन्तःक्रियाएँ अर्थात सामाजिक कारण रहते है।''

सामाजिक मनोविज्ञान का शैक्षिक निहितार्थ

सामाजिक मनोविज्ञान का महत्व वैश्वीकरण के इस दौर में निरन्तर बढ़ता जा रहा है। उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण ने जो सामाजिक आर्थिक प्रभाव उत्पन्न किये है उनके परिप्रेक्ष्य में यह पाया गया है कि सामाजिक मनोविज्ञान उन समस्त परिस्थितियों धारणाओं एवं समस्याओं का अध्ययन करता है जो इनके कारण उत्पन्न हुई है सामाजिक मनोविज्ञान के महत्व को उसकी अध्ययन वस्तु के आधार भिन्न–भिन्न रूप से प्रस्तुत करके स्पष्ट किया जा सकता है जो इस प्रकार से है–

(1) व्यक्तियों को समझाने में सहायक है।

(2) सामाजीकरण व्यक्ति व समाज तीनों को परस्पर जानने में सहायक है।

(3) व्यक्ति विशेष के व्यवहार को समझने में सहायता करता है।

(4) माता–पिता एवं अभिभावकों के लिये महत्वपूर्ण है।

(5) सामाजिक मनोविज्ञान वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करता है।

(6) शिक्षकों के लिये अपने विद्यार्थियों को समझने तथा अध्ययन के उचित तरीकों को जानने में सहायक है।

(7) समाज सुधारकों, प्रशासकों के लिये लाभकारी है।

(8) विज्ञापन एवं प्रचार–प्रसार की दृष्टि से उपयोगी होता है।

(9) सम्पूर्ण राष्ट्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विभिन्न क्रान्तियों युद्धों अफवाहों एवं तनावों को रोकने में सामाजिक मनोविज्ञान सहायक है।

(10) सामाजिक मनोविज्ञान आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक जीवन, सामाजिक जीवन में सहायक है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने में सहायक है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सिंह रामपाल– सामाजिक अध्ययन का शिक्षण
2. अग्रवाल जे0सी0– Teaching Social Studies
3. कुमार कृष्ण– राज समाज और शिक्षा– राजकमल प्रकाशन– नई दिल्ली
4. सिंह अरूण कुमार –समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा– मोती लाल बनारसी दास– नई दिल्ली
5. L.N.M.U– समाज मनोविज्ञान
6. विकीपीडिया